पंचम अध्याय
उपसंहार।

उपसंहार

प्रस्तुत लघु–शोध प्रबंध में मैंने चार अध्यायों में अश्क जी के जीवन और कृतित्व – व्यक्तित्व पर एक दृष्टिक्षेप और उनके नाटकों में रंगमंच पर न आने वाले पात्रों का विभिन्न दृष्टियों से शोध लगाने का प्रयास किया है । इसी आधार पर निम्नांकित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं ।

इस लघु–शोध प्रबंध में निम्नांकित अध्याय हैं ––

1.उपेंद्रनाथ अश्क : एक दृष्टिक्षेप ।

2.रंगमंच पर न आने वाले पात्र : स्वरूप, महत्व एवं आवश्यकता ।

3.अश्क'जी के नाटकों में रंगमंच पर न आने वाले पात्र ।

और

4.अश्क'जी के नाटकों में रंगमंच पर न आने वाले पात्र : विविधता एवं विशेषताएँ ।

इन चार अध्यायों के आधार पर अश्क जी के पसंद की तकनीक का इस दृष्टि से विचार किया गया है कि उन्होंने अपनेनाटकों में किन अमूर्त पात्रों का सफलता से चित्रण किया है? उन पात्रों की विविधता, अमूर्त पात्रों का नाटक में क्या महत्व है ? साथ ही स्थान–स्थान पर नाटक के उद्देश्य, समस्याओं आदि को स्पष्ट करने में अमूर्त पात्र भी किस प्रकार योगदान देते है ?

प्रथम अध्याय में अश्क जी का संक्षिप्त जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व का सामान्य परिचय दिया है । अश्क जी अपने जीवन के अंत तक सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति करते रहे हैं । वे यथार्थवादी परंपरा केसफल नाटककार हैं । उनका जीवन और साहित्य इसी की मिसाल है

अश्क जी बचपन से ही एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे । पाँच वर्ष की आयु में उन्हें संस्कृत के श्लोक कंठस्थ थे । उन्होंने एल.एल.बी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में प्राप्त की थी ।

अश्क जी के बचपन ,यौवन और बीमारी के दिन आर्थिक समस्याओं के साथ जूझते हुए बीते हैं ।बचपन से ही वे रोजी रोटी के लिए काम करते थे ।एक ही जीवन में अनेक पदों पर काम करने की इच्छा वे रखते थे । जीवनमें जो–जो चाहा,उसे उन्होंने कठिण परिश्रम कर के प्राप्त किया है ।

वे एक बहुआयामी व्यक्तित्व वाले साहित्यकार थे । जीवन में वे रिपोर्टर ,अध्यापक ,अनुवादक, संपादक , वक्ता, विज्ञापन – विशेषज्ञ ,वकील, रेडिओ आर्टिस्ट , अभिनेता, सिनारिस्ट, लेखक , कवि, गीतकार, डायरेक्टर आदि बनें हैं । जीवन में इन भूमिकाओं को निभाते समय वे अनेक अनुभवों से परिचित रहे हैं । बचपन से ही वे कविता करने और नाटक देखने में रूचि रखते थे । उन्होंने अपना जीवन एक नायक की तरह बीताया है । उनमें परिश्रमशीलता, बहुमुखी, प्रतिभाशाली कला की अपूर्व आस्था रखने वाले, गंभीर ज्ञान के साथ बच्चों कीचंचलता , भोलापन और दूसरों को अकारण छेड़ कर रस लेना आदि प्रवृत्तियाँ थी ।

अश्क जी ने अपने जीवन में अनेक मुसीबतों का सामना करते हुएएक सफल साहित्यिक के रूप में हिंदी जगत् में अपनी एक पहचान स्थापित की है । इस कार्य में उनकी पत्नी कौशल्या जी ने अनेक मुसीबतों का सामना करते हुए उनका साथ निभाया है । उनके अशांत और खिन्न जीवन में कौशल्या जी ने प्रवेश कर के उन्हें हर कदम पर सहारा दिया है । अश्क जी की सफलता के पीछे कौशल्या जी का त्याग और प्रेरणा हैं ।

अश्क जी दिलचस्य , प्रतिभावान,अग्रणी साहित्यकार, प्रख्यात उपन्यासकार ,कहानीकार एवं रंगमंच की दृष्टि से सफल नाटककार हैं । साहित्य की सभी विधाओं पर उन्होंने अपनी लेखनी निर्बाध गति से चलाई हैं । उपन्यास ,कहानी, नाटक और एकांकी में वे विशेष प्रसिद्ध रहे हैं । साथ ही उन्होंने काव्य, निबंध ,अनुवाद , संस्मरण और आलोचना में भी अपनी लेखनी का कमाल दिखाते हुए संपादन कार्य में भी अपना योगदान दिया है ।

ऐसे महान, बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार, मिलनसार, सर्वतोन्मुखी, सौम्य, मधुरभाषी, उदारचेता एवं विषम पारिवारिक परिस्थितियों में भी होंठों पर सदैव मंद मुस्कान रखने वाले व्यक्तित्व से सारा हिंदी जगत् आज वंचित है ।

द्वितीय अध्याय में रंगमंच पर न आने वाले पात्रों का स्वरूप, महत्व एवं आवश्यकता आदि पर विचार किया गया है । इन बातों का विवेचन करने के लिए अश्क जी के नाटकों में चित्रित अनुपस्थित पात्रों के उदाहरण दिये हैं ।साथ ही अर्थोपक्षेपक से यह स्पष्ट किया है कि पुराने नाटकों में अनुपस्थित पात्रों का स्वरूप किस प्रकार का था ।

पुराने नाटकों में अर्थोपक्षेपक कथावस्तु की समग्र सूचना या कथांश को अपने निवेदन या संवाद से देते थे कि जो कथाभाग रंगमंच पर दिखाया नहीं जाता था । युद्ध,उत्सव, मरण, वध,

राज्यभ्रंश जैसे रंगमंच पर दिखाये न जाने वाले दृश्यों से संबंधित जो व्यक्तित्व उभरते थे उनमें कई ऐसे पात्र होते थे कि वे रंगमंच पर प्रस्तुत न हो कर अपनी चरित्रगत विशेषताओं को दर्शक के मन पर बिंबित करते थे । अर्थोपक्षेपक का चूलिका के पात्र अमूर्त पात्रों के अधिक निकट जान पड़ते हैं ।

प्राचीन नाटकों के अमूर्त पात्र और अश्क जी के अमूर्त पात्रों की सृष्टि की तकनीक में प्रायः अंतर है ।अश्क जी ने इन्हें साकार किया है, जिनके लिए मंचीय पात्र भी परेशान रहते हैं ।

नायक का विकास, उसके आधारभूत विचार के वैयक्तिकरण, उसके उद्दिष्ट की उत्पत्ति और चरमसीमा तक पहुँचाने में अमूर्त पात्रों का भी योगदान रहता है । नाटक में रोचकता और स्वाभाविकता लाने के साथ कथावस्तु का विकास और नायक–नायिका के चरित्र भी उभारने के लिए इन की मदद होती है। इन की योजना से कथाभाग आनंदमय, मनोरंजक तथा प्रभावशील बनता है और ऐसे पात्रों से संबंधित घटनाओं के उचित संघर्ष से दर्शकों में रोचकता ,औत्सुक्य, आकर्षण एवं उत्कंठा की भावना जाग उठती है । इन में से अगर कोई प्रमुख विरोधी पात्र हो, तो नायक का चरित्र अधिक निखर आता है ।

अश्क जी के संवादों में जो गतिशीलता दिखायी देती है, उसका कारण है अमूर्त पात्रों की निर्मिति पर श्रम और निष्ठा से किया हुआ उनका काम । आज भी भारत जैसे देश में तूफान ,बलात्कार, त्योहार, यात्रा, खेल, बारिश, उत्सव, ज्वालामुखी–विस्फोट ,भूकंप ,हिमपात ,नग्नता ,बाढ़ जैसे दृश्य मंच पर दिखाना संभव नहीं या भारतीयों की रूचि के खिलाफ हैं । अभिनेताओं की सीमितता और अभिनेताओं की समस्या पर एक उपाय समझ कर भी व्यावसायिक नाटक कंपनियाँ ऐसे नाटकों की माँग करते हैं जिनमें पात्रों की संख्या अधिक न हो और बाल पात्र भी न हो । मानवेतर प्राणि पात्रों को मंच पर प्रस्तुत करना भी एक कठिन कार्य है । इनसभी समस्याओं पर एक ही इलाज है –अमूर्त पात्रों का निर्माण और उनका चरित्र–चित्रण ।

लेकिन ऐसे करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आपका नाटक एक उपन्यास न हो जाय । इसलिए अमूर्त पात्रों की दृष्टि उचित स्थान और संप्रेषणीय उद्दिष्ट की पूर्ति के लिए ही होनी चाहिए । नहीं तो सीमित पात्रों की निर्मिति के वश में जा कर आपका नाटक एक आख्यान बन जायगा ।

तृतीय अध्याय में अश्क जी के नाटकों में रंगमंच पर न आने वाले पात्रों का शोध लिया गया है । अश्क जी ने अपना पहला नाटक " जय–पराजय " प्रसाद परंपरा के अनुकूल लिखा है ।

इस ऐतिहासिक नाटक के बाद उन्होंने अपनी सारी दृष्टि यथार्थता पर रखी है ।इसीलिए उनके पात्र अपने लगते हैं।अथवा उनके पात्रों में हमारी या हमारे परिवेश के व्यक्तित्वों की छवि मिलती है । पुराने नाटकों से चले आये अनुपस्थित पात्र–निर्मिति की तकनीक को अपनी पसंद की तकनीक मान कर अश्क जी ने अपने हर नाटक में अमूर्त पात्रों का एक अलग ढंग से निर्माण किया है ।

अश्क जी के कुल ग्यारह नाटक हैं । ये हैं " जय–पराजय", स्वर्ग की झलक, छठा बेटा, अंधी गली,कैद, उड़ान, पैंतरे, अलग अलग रास्ते,अंजोदीदी, भँवर और बड़े खिलाड़ी । संख्यात्मक दृष्टि से " अंधी गली " में अमूर्त पात्रों का निर्माण आधिक हुआ है । " पैतरे " में भी अमूर्त पात्रों की संख्या कुछ अधिक हैं । अश्क जी ने अपने नाटकों में अधिकतर पात्रों की योजना अधिक की है । "पैंतरे " में तो केवल उल्लेख वाले अमूर्त पात्र ही अधिक है । मिस शमीम (पैंतरे),किंगकाँग (कैद), प्रकृति का निर्माता (उड़ान) ,स्व. नाना जी (अंजोदीदी), प्रो. नीलाभ (भँवर), आदि पात्र गौण होते हुए भी नाटक पर ऐसे छाये हुअे हैं, जैसे कि इन के बिना नाटक अधूरा लगता हो । इन का चरित्रांकन पूर्णतः से न होते हुए भी ये पूरे नाटक भर में छाये हुअे लगते हैं ।

मदन (अलग अलग रास्ते),एक प्रमुख सहायक अमूर्त पात्र है फिर भी उसे दर्शक तथा लेखक की सहानुभूति प्राप्त हुई है ।"बडे खिलाड़ी " के केवलराम और शीला मास्टरनी जैसे अमूर्त पात्रों की निर्मिति से अश्क जी अपने पसंद की तकनीक की चरमसीमा पर पहुँचे हैं । नाटक देखते समय ऐसा लगता है कि कुछ ही क्षणों में केवलराम और शीला मास्टरनी मंच पर प्रस्तुत हो कर अपनी कलाबाजियाँ पेश करेंगे । लेकिन नाटक के अंत तक ये मंच पर प्रस्तुत न हो कर भी इनकी सारी करतूतें स्पष्ट होती हैं और दर्शक के मन–मस्तिष्क में इन के लिए जगह बनती है । इसी में हमें अश्क जी की लेखनी का कमाल नजर आता है ।

अश्क जी ने अमूर्त पात्रों की योजना करते समय इस ओर ध्यान दिया है कि ये कहीं बाधक न बन जायें । अथवा नाटक में ये भरती के मालूम न हो । यही कारण है कि अमूर्त पात्रों की योजना में वे सफल रहे हैं । उन्होंने अमूर्त पात्रों को भी अंगूठी के नगीने की तरह उचित जगह पर रेखांकित कर के नाटक में फिट किया है । ये अमूर्त पात्र नाटक की कथा वस्तु, समस्या और उद्देश्य को उजागर करने में भी मदद करते हैं ।

चौथे अध्याय में रंगमंच पर न आने वाले पात्रों की विविधता तथा विशेषताओं का परिचय कराया गया है । नाटक के पात्रों को सजीव,यथार्थ, और संप्रेषणीय बनाने के लिए जीवन की

विभिन्न अनुभूतियों से परिचित होना जरूरी होता है । अश्क जी इस दृष्टि से अधिक निकट लगते हैं । इसीलिए उनके नाटकों में मध्य वर्ग जीवन के विविध व्यक्तित्व उभरें हैं ।

अश्क जी आदर्शवादी अतीत से उठ कर यथार्थवादी वर्तमान की ओर बढ़ने वाले सजग कलाकार हैं । प्राचीन परंपरा के ऐतिहासिक नाटकों से उनकी रूचि जल्द ही उठ गयी ।और अपने नाटकों के लिए उन्होंने अपने ही परिवेश के जीवंत व्यक्तित्वों को अपने नाटकों का पात्र बनाया ।इसीलिए उनके नाटकों में वर्तमान समाज जीवन के विभिन्न नमूनों का चरित्रांकन हुआ है । व्यक्तिवादी, महत्वाकांक्षी ,सज्जन एवं दुष्ट,दुहरे चरित्र वाले, अधम प्रवृत्ति के अनेक लोग हमें हमारे जीवन में मिलते हैं। इन्हीं की छवि हमें अश्क जी के अमूर्त पात्रों में भी मिलती है ।

अश्क जी ने विभिन्न स्थलों की यात्रा की है और विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार के काम किये हैं । जिस वस्तु, घटना और व्यक्ति से उनका संबंध आया है, उसी को उन्होंने अपने नाटक का आधार माना है । उनके नाटकों में विविध व्यवसाय वाले पात्रों का चरित्राकंन हुआ है । अध्यापक ,वकील,मकान–मालिक,वैद्य, डॉक्टर, कवि, गायक, नर्तक, शायर, लेखक, गीतकार, प्रेसवाले, कुली, ठेले वाले, कहार, नौकर–नौकरानी, ज्योतिषी, पंडित , पुरोहित, अभिनेता–अभिनेत्री, प्रोडयूसर, डायरेक्टर,एकस्ट्रा सप्लायर, कहानीकार, एडमनिस्ट्रेटर, हेल्थ अफसर, कमीश्नर, शरणार्थी अफसर, टी.आर.ओ.आदि कितने ही प्रकार के व्यवसाय करने वाले व्यक्तित्वों को अश्क जी ने अमूर्त पात्रों में ढाला है ।

स्त्री–पुरूष के विभिन्न रूप भी अश्क जी के अमूर्त पात्रों में मिलते हैं । मानवीय भावनाओं के आरोपन के लिए आलंबन, स्वभाव, काल और प्रवृत्ति को स्पष्ट करने के लिए मानवेतर प्राणियों को आधार बनाया है । मानवेतर प्राणियों के साथ मनोवैज्ञानिक अमूर्त पात्रों का भी निर्माण अश्क जी ने किया है । उनका प्रत्येक पात्र केवल एक इंसान है, न कि यंत्र । दुर्बलता–सबलता, क्रूरता – दयालुता, उदारता–संकीर्णता ,सफलता–असफलता ,आशा–निराशा ,प्रसन्नता–उदासी आदि मानवीय भावनाएँ अश्क जी के अमूर्त पात्रों में भी मिलती है ।